टॉप न्यूज़

बजट 2023

इकोनॉमी

मार्केट

पर्सनल फाइनेंस

टेक - ऑटो

एमएसएमई

कंज्यूमर

मनी नॉलेज

खरगोन पीजी कॉलेज में हुई संगोष्ठी: जनजातीय नायकों के बलिदान पर हुई चर्चा

खरगोन
एक महीने पहले

फीडबैक दें

DivyaMarathi.com
MoneyBhaskar.com
HomeOnline.com
BhaskarAd.com
Copyright © 2022-23 DB Corp ltd., All Rights Reserved
This website follows the DNPA Code of Ethics.

खरगोन शासकीय पीजी कॉलेज खरगोन में मंगलवार को राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग नई दिल्ली एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत “स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय नायकों का योगदान” विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी की शुरुआत में राष्ट्रगान का गायन हुआ। जिसके पश्चात जननायक कोमुरम भिमुड़ो पर आधारित गीत एवं वीडियो का प्रसारण किया गया। स्वागत भाषण में प्राचार्य डॉ. आरएस देवड़ा ने दिया। उन्होंने ने अतिथियों का विस्तार से परिचय कराते हुए संगोष्ठी के विषय को स्पष्ट किया।

मुख्य अतिथि झाबुआ समाजसेवी राजाराम कटारा ने अपने उद्बोधन में बताया की भारतीय गौरव से जुड़ी समस्त लड़ाइयों में, आंदोलनों में तथा क्रांतियों में जनजातीय समुदायों ने पूर्ण समर्पण और पराक्रम के साथ अपना योगदान दिया। झाबुआ जिले में ‘मातावन’ जैसी परम्परा सभी समाजों को वनों के प्रति भक्ति सिखाती है। दुनिया की समस्त समस्याओं तथा पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग इत्यादि का समाधान हमे जनजातीय समुदाय की संस्कृति और आचरण में देखने को मिलता है।

प्रमुख अतिथि जनजाति विकास मंच के संयोजक संतोषजी बघेल ने बताया की जनजातीय समुदाय

फीडबैक दें

सभी की सुख समृद्धि के लिए संघर्षरत रहा है। संथाल आन्दोलन, पहाड़ी आंदोलन और सिद्धू-कान्हू, तिनका मांझी, भगवान बिरसा मुंडा, टंट्या मामा भील, ख़्वाज्या नायक जैसे बलिदानियों के योगदान पर विस्तार से अपने विचार रखे।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के प्राध्यापक डॉ. सखाराम मुजाल्दा ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह कार्यक्रम केवल जनजातीय समुदाय के लोगों के लिए आयोजित नहीं किया जा रहा है अपितु इसका उद्देश्य इस महत्वपूर्ण विषय पर वैचारिक मंथन करना है तथा जनजातीय समुदाय के प्रति सामाजिक स्तर पर एक सकारात्मक सोच का निर्माण करना है।

जनभागीदारी समिति अध्यक्ष दीपक कानूनगो ने बताया कि सबसे पहले एक क्रांतिकारी के रूप में कालापानी की सजा भीमा नायक को मिली थी। महाराणा प्रताप के साथ युद्ध में पूंज्या भील का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

फीडबैक दें